P.V.G.'s

Muktangan English School & Jr. College, Pune - 9

Annual Examination (2024-25)

Standard - IX

Subject - Hindi (Entire) | **Marks - 80**

Date - 27/03/2025 | **Time : 8.00 am to 11.00 am**

सूचनाएँ:

१) **सूचनाओं के अनुसार गद्य, पद्य तथा भाषा अध्ययन (व्याकरण) की आकलन कृतियों में आवश्यकता के अनुसार आकृतियों में ही उत्तर लिखना अपेक्षित है ।**

२) **सभी आकृतियों के लिए पेन का ही प्रयोग करें ।**

३) **उपयोजित लेखन रचना विभाग तथा व्याकरण विभाग में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर के लिए आकृतियों की आवश्यकता नहीं है ।**

४) **शुद्ध, स्पष्ट भाषा एवं सुवाच्य लेखन अपेक्षित है ।**

विभाग १ - गद्य (२० अंक)

प्रश्न १ अ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

जब तीन दिन की अनथक खोज के बाद बाबू रामगोपाल एक नौकर ढूँढ़कर लाए तो उनकी क्रुद्ध श्रीमती और भी बिगड़ उठीं। पलंग पर बैठे-बैठे उन्होंने नौकर को सिर से पाँव तक देखा और देखते ही मुँह फेर दिया ।

''यह बनमानस कहाँ से पकड़ लाए हो ? इससे मैं काम लूँगी या इसे लोगों से छिपाती फिरूँगी ?'' इसका उत्तर बाबू रामगोपाल ने दिया।

''जानती हो, तलब क्या होगी ? केवल बारह रुपए।.... सस्ता नौकर तुम्हें आजकल कहाँ मिलेगा ?''

''तो काम भी वैसा ही करता होगा,'' श्रीमती बोलीं ।

''यह मैं क्या जानूँ? नया आदमी है, अभी अपने गाँव से आया है।''

श्रीमती जी की भौंवें चढ़ गईं, ''तो इसे काम करना भी मैं सिखाऊँगी ? अब मुझपर इतनी दया करो, जो किसी दूसरे नौकर की खोज में रहो। जब मिल जाए तो मैं इसे निकाल दूँगी।''

बाबू रामगोपाल तो यह सुनकर अपने कमरे में चले गए और श्रीमती दहलीज पर खड़े नौकर का कुशल-क्षेम पूछने लगीं। नोकर का नाम हेतू था और शिमला के नजदीक एक गाँव से आया था। चपटी नाक, छोटा माथा, बेतरह से दाँत, मोटे हाथ और छोटा-सा कद, श्रीमती ने गलत नहीं कहा था। नाम-पता पूछ चुकने के बाद श्रीमती अपने दाएँ हाथ की उँगली पिस्तौल की तरह हेतू की छाती पर दागकर बोलीं, ''अब दोनों कान खोलकर सुन लो। जो यहाँ चोरी-चकारी की तो सीधा हवालात में भिजवा दूँगी । जो यहाँ काम करना है तो पाई-पाई का हिसाब ठीक देना होगा।''

१) संजाल पूर्ण कीजिए। (२)

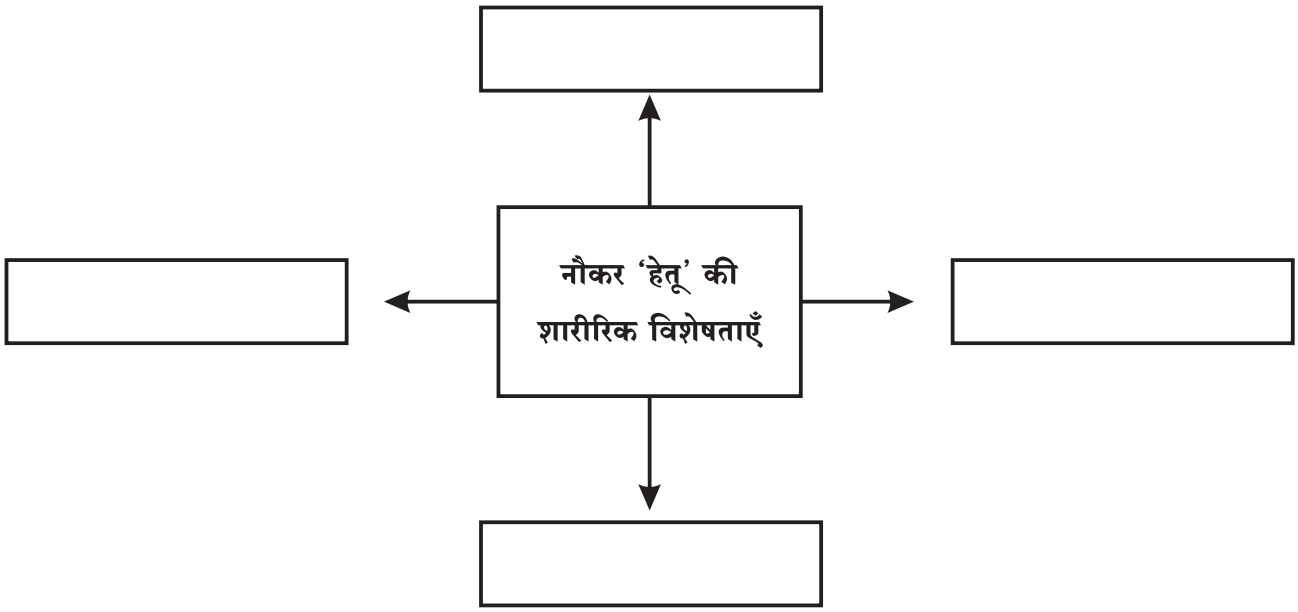

2) एक/दोन शब्दों में उत्तर लिखिए। (२)

i) नौकर ढूँढकर लानेवाले ----------

ii) नौकर इतने रूपए में मिला था----------

iii) श्रीमती जी ने बनमानस इसे कहा था ----------

iv) चोरी-चकारी करने पर श्रीमती सीधा यहाँ भिजवा देगी ----------

3) i) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए। (१)

१) नौकर X

२) सस्ता X

ii) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए। (१)

१) खोज -

२) नजदीक -

४) नौकरों के साथ सौहार्दपूर्ण (प्रेमपूर्वक) व्यवहार करना चाहिए इस विषय पर अपने विचार २५ ते ३० शब्दों में लिखिए। (२)

आ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

इस मानव आकृतियों के चित्रों में मूर्तिशिल्प का समन्वय था। स्त्री रंगों के बिना जहाँ उन्होंने रेखाओं से आकृतियाँ बनाई थीं, वहाँ उनमें मांस, मज्जा और अस्थियाँ तक को देखा जा सकता था। रेखाओंवाले चित्रों में एक प्रवाह, ऊर्जा, उमंग और चुस्ती-फुर्ती थी। लगता था, ये आकृतियाँ अभी संवाद करेंगी, हाथ पकड़कर साथ हो लेंगी। इतनी जीवंतता। रंग-रेखाओं से उनका प्यार उनकी हर साँस से नि:सृत होता, जो उनके चित्रों को सजीव कर देता । लगता था, वे हर दृश्य, परिदृश्य, स्थिति और व्यक्ति को रंगों और रेखा में ढाल देंगे ।

❊ अमरनाथ घर के भीतर कैनवास पर फूलों, पत्तों झरने और हरियाली के चित्र बनाते, वहीं घर के बाहर की जितनी खुली जमीन थी, माली के साथ उन्होंने उस जमीन को तैयार करवाया था। सामने की जमीन में बगीचा बनाया था, जिसमें रंग-बिरंगे मौसम के फूल क्यारियों में लगाए थे। उन्होंने ऋतुओं के क्रम से फूलों के पौधे लगवाए थे। गरमी के बाद बरसात और बरसात के बाद सरदी के पौधों में फूल खिलते । घर के पीछे की जमीन में उन्होंने फलों के पेड़ लगा दिए थे। घर की चारदीवारी के साथ फूलों और फलों की बेलें चढ़ा दी थीं। घर और बाहर के लोग आश्चर्य से उनकी और देखते। वे हँसते, मैं जीवन का व्याकरण बना रहा हूँ। जीवन के अछूते सच के शिखर पर चढ़ने के लिए सीढ़ियाँ लगा रहा हूँ,' कहकर हँसने लगते।

१) संजाल पूर्ण कीजिए। **(२)**

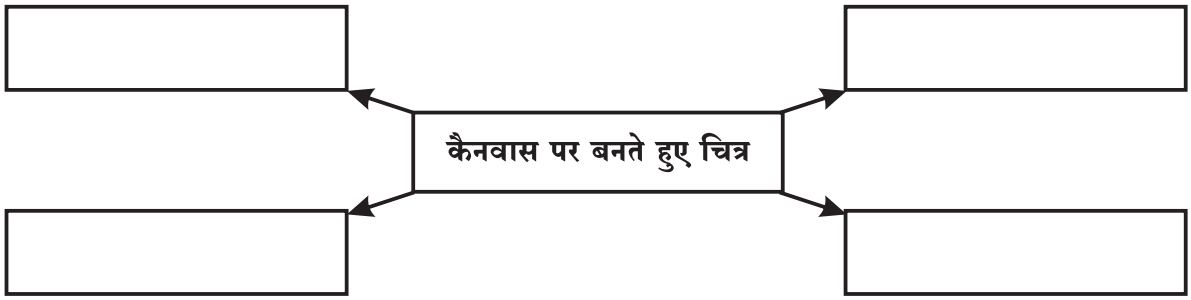

२) उत्तर लिखिए। **(२)**

i) घर के सामने की जमीन में यह बनाया था----------

ii) घर के पीछे की जमीन में यह लगाया था----------

३) सूचनाओं के अनुसार कृति पूर्ण कीजिए। **(१)**

i) गद्यांश में प्रयुक्त शब्दयुग्म लिखिए।

१)

२)

ii) वचन परिवर्तन करके वाक्य फिर से लिखिए । **(१)**

१) फलों की बेलें चढ़ा दी थी ।

४) 'हमारा बगीचा' इस विषय पर २५ ते ३० शब्दों में अपने विचार लिखिए। **(२)**

इ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

छुट्टी का दिन आता तो कोलंबस समुद्र के किनारे पर जा खड़ा होता। समुद्र के नीचे, निर्मल जल को देखता तो आँखों में ठंडक पड़ती। समुद्र की लहरों को उठते देखता, तो उसका मन झूम जाता। समुद्रतल पर तैरते हुए जहाज़ देखता, तो एकटक देखता ही रहता। जब कोई जहाज बंदरगाह में आकर ठहरता तो वह भागकर नाविकों के पास पहुँचता । वे उसे कहानियाँ सुनाते, ''दूर, बहुत दूर, समुद्र पार एक हिंदुस्तान नामक देश है। वहाँ सोना है, हीरे हैं। वहाँ के लोग रेशमी कपड़े पहनते हैं।'' वह इन कहानियों को सुनता और दिल में कहता ''क्या कभी एसा दिन भी आएगा, जब मैं जहाज में बैठकर समुद्र पार जाऊँगा और नए-नए देश देखूँगा?'' वह आँखे बंद कर लेता और मन के संसार में जहाज बनाता, उसमें सवार होता और दूर, बहुत दूर फैले हुए समुद्रों में घूमता, परियों के देश की सैर करता और प्रसन्न होता । यह था तो बच्चे का स्वप्न, परंतु जब वह बच्चा बड़ा हुआ, तो उसने इस स्वप्न को सच्चा कर दिखाया। यही कोलंबस था जिसने समुद्र पार किया और अमेरिका महाद्वीप ढूँढ़ निकाला।

१) संजाल पूर्ण कीजिए। **(१)**

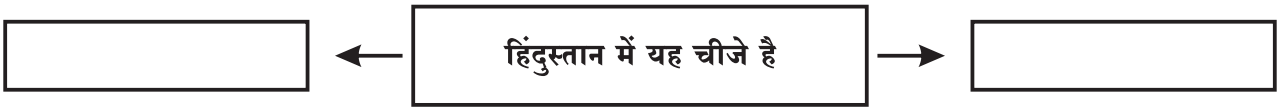

२) एक शब्द में उत्तर लिखिए। **(१)**

i) अमेरिका महाद्वीप किसने ढूँढ निकाला?

ii) कोलंबस ने नाविकों से कहानी सुनी थी वह जगह कौन-सी थी?

३) अमेरिका महाद्वीप' इस विषय पर २५ से ३० शब्दों में अपने विचार लिखिए। **(२)**

विभाग २ - पद्य (१२ अंक)

प्रश्न २ अ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

बिना विचारे जो करे, सो पाछै पछताय।
काम बिगारै आपनो, जग में होत हँसाय ।।

जग में होत हँसाय, चित्त में चैन न आवै ।
खान-पान-सनमान, राग-रंग मनहि न भावै ।।

कह गिरिधर कविराय, दुख कछु टरत न टारे ।
खटकत है जिय माँहि, कियो जो बिना विचारे ।।

बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेइ ।
जो बनि आवै सहज में, ताही में चित देइ ।।

ताही में चित देइ, बात जोई बनि आवै।
दुर्जन हँसे न कोय, चित्त में खता न पावै ।।

कह गिरिधर कविराय यहै करु मन परतीती ।
आगे की सुधि लेइ, समझु बीती सो बीती ।।

१) संजाल पूर्ण कीजीए । **(२)**

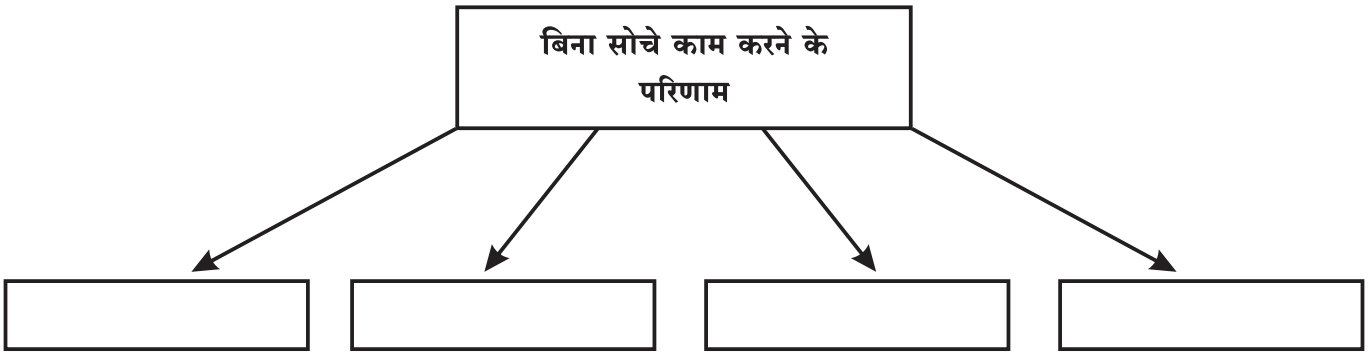

२) i) निम्नलिखित विरामचिह्नों के नाम लिखिए। **(१)**

१) [,] =

२) [।] =

ii) निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग लगाकर नए शब्द बनाइए। **(१)**

१) चैन –

२) विचार –

३) उपर्युक्त पद्यांश की प्रथम छह पंक्तियों का सरल अर्थ २५ से ३० शब्दों में लिखिए। **(२)**

आ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

घोर अंधकार हो,
चल रही बयार हो,
आज द्वार-द्वार पर यह दीया बुझे नहीं,
यह निशीथ का दीया ला रहा विहान है ।

शक्ति का दीया हुआ,
शक्ति को दीया हुआ,
भक्ति से दीया हुआ,
यह स्वतंत्रता दीया हुआ,
रुक रही न नाव हो,
जोर का बहाव हो,
आज गंगधार पर यह दीया बुझे नहीं,
यह स्वदेश का दीया प्राण के समान है।

यह अतीत कल्पना,
यह विनीत प्रार्थना,
यह पुनीत भावना,
यह अनंत साधना,
शांति हो, अशांति हो,
युद्ध, संधि, क्रांति हो,
तीर पर, कछार पर, यह दीया बुझे नहीं,
देश पर, समाज पर, ज्योति का वितान है ।

१) संजाल पूर्ण कीजिए। **(२)**

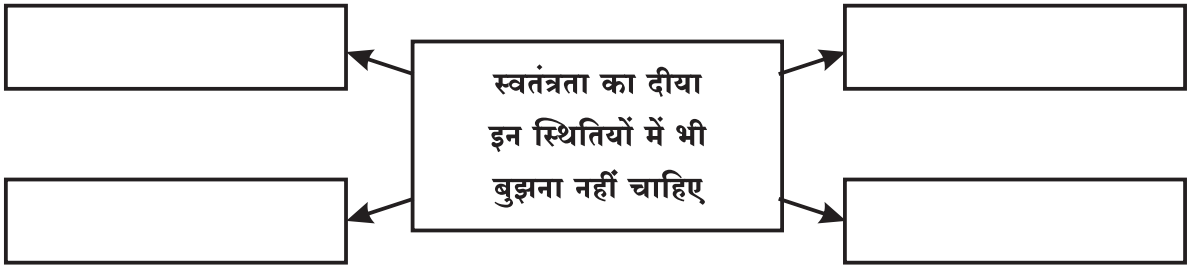

2) i) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए। **(१)**

१) शक्ति –

२) स्वतंत्र –

ii) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए। **(१)**

१) अंधकार x

२) स्वेदश x

३) शक्ति का दिया हुआ------

यह स्वदेश का दीया प्राण के समान है ।

इन पंक्तियों का सरल अर्थ लिखिए। **(२)**

विभाग ३ - पूरक पठण (८ अंक)

प्रश्न ३ अ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

पॉयनियर प्रेस में प्रताप की समय की पाबंदी, शुद्ध-स्वच्छ लिखावट, सही-साफ हिसाब-किताब रखने की आदत, विनम्र-निश्चल व्यवहार ने बहुत जल्दी उनको विशिष्टता दे दी। अपना काम खत्म कर वे सहयोगी क्लार्कों का पिछड़ा काम भी अपनी मेज पर रख लेते और दफ्तर बंद हो जाने के घंटों बाद, रात देर तक काम में जुटे रहते। इस प्रकार वे अधिकारियों और सहकर्मियों, दोनों के प्रिय बन गए । घर से दफ्तर चार मील होगा; कुछ कम भी हो सकता है। फासले के मामले में मेरा अनुमान हमेशा गलत होता है-ज्यादा की तरफ। वे पैदल ही आते-जाते शायद पैसे बचाने की गरज से, साइकिल न उन्होंने खरीदी, न उसकी सवारी की ।

दफ्तर के लिए उन्होंने एक तरह की पोशाक अपनाई और जितने दिन दफ्तर में गए उसी में गए-काला जूता, ढीला पाजामा, अचकन जो उनके लंबे-इकहरे शरीर पर खूब फबती थी और दुपल्ली टोपी। जाड़ो में मेरी माँ के हाथ का बुना ऊनी गुलूबंद उनके गले में पड़ा रहता था। दफ्तर से बाहर के लिए वे धोती पर बंद गले का कोट पहनते थे, सिर पर फेल्ट कैप जो उन दिनों विलायत से आती थी और काफी महँगी होती थी। पिता जी बाहर निलकते तो छाता उनके हाथ में जरूर होता। मौसम साफ हो और रात हो तो वे छड़ी लेकर चलते थे, पर पतली नहीं अच्छी मोटी-मजबूत। लंबी लाठी मेरे घर में नहीं थी, पर लाठी चलाने की तालीम पिता जी ने कभी जरूर ली होगी । मुझे एक बार की याद है। शहर में किसी कारण हिंदू-मुस्लिम दंगा हो गया था ।

१) संजाल पूर्ण कीजिए। **(२)**

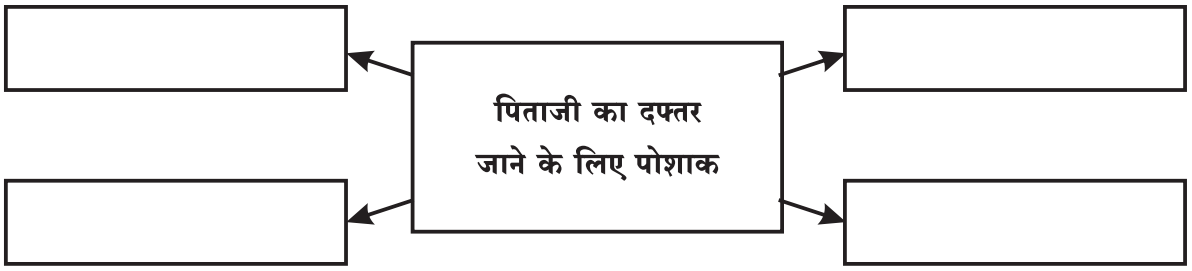

२) 'मेरे पिताजी' इस विषय पर २५ से ३० शब्दों में अपने विचार लिखिए। **(२)**

आ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

कितनी सुंदरता बिखरी
प्राकृतिक जगत में, ईश्वर,
टपक रही गिरि-शिखरों से झर,
लोट रही घाट में
लिपटी धूप छाँह में नि:स्वर!

अनिल स्पर्श से पुलकित तृण दल,
बहती सीमाहीन
श्लक्ष्ण संगीत स्रोत-सी
अहरह वन-भू मर्मर!

फूलों की ज्वालाएँ
आँखें करतीं शीतल,
मुकुल अधर मधु पीते
गुंजन भर मधुकर दल!
तितली उड़तीं,
दूर, कहीं पल्लव छाया में
रुक-रुक गाती वन प्रिय कोयल!

१) संजाल पूर्ण कीजीए । **(१)**

२) एक वाक्य में उत्तर लिखिए। **(१)**

i) आँखों को शीतलता कौन देता है ?

ii) मधु पीकर कौन गुंजन करता है ?

३) 'प्राकृतिक सुंदरता' इस विषय पर २५ ते ३० शब्दों में अपने विचार लिखिए। **(२)**

विभाग ४ - भाषा अध्ययन (व्याकरण) (१४ अंक)

प्रश्न ४) सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

१) अधोरेखांकित शब्द का शब्दभेद पहचानकर लिखिए। **(१)**

i) <u>पीयूष</u> को खरगोश और तोता चाहिए।

२) निम्नलिखित अव्ययों में से किसी <u>एक</u> अव्यय का अर्थपूर्ण वाक्य में प्रयोग कीजिए। **(१)**

i) और

ii) बहुत

३) कृति पूर्ण कीजिए। **(१)**

शब्द	संधि-विच्छेद	संधि भेद
-----	सम् + तोष	-----

अथवा

सदैव	---- + ----	------

४) निम्नलिखित वाक्यों में से किसी <u>एक</u> वाक्य की सहायक क्रिया पहचानकर उसका मूल रूप लिखिए। (१)

i) हेतू ने फिर धीर से कह दिया।

ii) इन्होंने आसानी से मेरा अपहरण कर लिया।

सहायक क्रिया	मूल क्रिया

५) निम्नलिखित वाक्यों में से किसी <u>एक</u> क्रिया का प्रथम तथा द्‌वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए। (१)

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्‌वितीय प्रेरणार्थक रूप
i) खाना	_____	_____
ii) धुलना	_____	_____

६) निम्नलिखित मुहावरों में से किसी <u>एक</u> मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए । (१)

i) मुँह फेरना –

ii) हाथ साफ करना –

अथवा

अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए कोष्ठक में दिए मुहावरों में से उचित मुहावरे का चयन करके वाक्य फिर से लिखिए।

(मिसरी घोलकर बोलना, जली-कटी सुनाना)

लेखक की पत्नी **<u>मीठी-मीठी बातें करने लगी</u>** ।

७) निम्नलिखित वाक्य पढ़कर प्रयुक्त कारकों में से कोई <u>एक</u> कारक पहचानकर उसका भेद लिखिए। (१)

i) मैं इतने दिनों आश्रम से बाहर रहा ।

ii) उन्हें मोनू की चिंता होने लगी ।

कारक चिह्न	कारक भेद

८) निम्नलिखित वाक्य में यथास्थान उचित विरामचिह्नों का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए । (१)

मैं दो एक दिन में दिल्ली जाऊँगा

९) i) **निम्नलिखित वाक्य का कालभेद पहचानिए।** **(१)**

1) मैंने एक दुबला – पतला व्यक्ति देखा था।

ii) **निम्नलिखित वाक्य का सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए।** **(१)**

1) शहर में किसी कारण हिंदू–मुस्लिम में दंगा हो गया था **(अपूर्ण वर्तमानकाल)**

१०) i) **निम्नलिखित वाक्य का रचना के आधार पर भेद पहचानकर लिखिए।** **(१)**

उन्हें घूमने का शौक था ।

ii) **निम्नलिखित वाक्यों में से किसी <u>एक</u> वाक्य का अर्थ के आधारपर दी गई सूचनानुसार परिवर्तन कीजिए।** **(१)**

1) सब तुमसे मिलने को उत्सुक हैं । **(विस्मयार्थक वाक्य)**

2) श्रीमती काम में व्यस्त थी । **(निषेधार्थक वाक्य)**

iii) **निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं <u>दो</u> वाक्यों को शुद्ध करके वाक्य फिर से लिखिए।** **(२)**

1) अरे तू कहा था इतना दिन ?

2) चौकीदार अगला घर के ओर बढ़ गया ।

3) यह ग्रह का नाम बडा विचित्र–सा है ।

विभाग ५ - रचना विभाग (उपयोजित लेखन) (२६ अंक)

सूचना : आवश्यकतानुसार परिच्छेद में लेखन अपेक्षित है ।

प्रश्न ५) सूचनाओं के अनुसार लेखन कीजिए।

१) निम्नलिखित जानकारी के आधारपर पत्रलेखन कीजिए। **(५)**

सुनिल/समिक्षा जोशी, विवेकानंद छात्रावास, जालना से अपने छोटे भाई सुमित जोशी, 6/36 जोशी मार्ग, इंदौर, मध्य प्रदेश को ''योग का महत्व'' समझाते हुए पत्र लिखता/लिखती है ।

अथवा

अजय सिन्हा / अंजना सिन्हा, सुंदरनगर, पुणे – 411001 से नगर विकास अधिकारी, नगर परिषद, पुणे – 411002 को बच्चों को खेलने के लिए बगीचा बनवाने हेतु पत्र लिखता / लिखती है ।

२) **गद्य आकलन - प्रश्न निर्मिती :** **(४)**

निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर ऐसे चार प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर गद्यांश में एक-एक वाक्य में हों।

बसंत के आगमन के साथ ही कभी-कभी ऐसा लगता है, मानो जंगल में लाल रंग की लपटें उठ रही हों, ये लपटें आग की नहीं बल्कि पलाश के नारंगीपन लिए लाल फूलों की होती हैं। पलाश के लाल-लाल फूल आग की लपटों के समान ही दिखाई देते हैं। इसीलिए इसे 'फ्लेम ऑफ द फायर' कहा जाता है ।

पलाश भारतीय मूल का एक प्राचीन वृक्ष है। इसे आदिदेव ब्रह्मा और चंद्रदेव से संबंधित अलौकिक वृक्ष माना जाता है। इसमें एक ही स्थान पर तीन पत्ते होते हैं । इस पर कहावत प्रचलित है - 'ढाक के तीन पात।' इसकी लकड़ी का हवन में उपयोग किया जाता है। इसीलिए इसे याज्ञिक भी कहते हैं। यज्ञ में काम आने वाले पात्र भी पलाश की लकड़ी से बनाए जाते हैं।

आ) २) **वृत्तांत लेखन:** **(५)**

आर्यन हाईस्कूल, गिरगाँव में मनाए गए गणतंत्र दिवस का ६० से ८० शब्दों में वृत्तांत लिखिए।

(वृत्तांत में स्थल, काल, घटना का उल्लेख होना अनिवार्य है)

अथवा

२) **कहानी लेखन:**

निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर 70 से 80 शब्दों में कहानी लिखकर उसे उचित शीर्षक दीजिए तथा सीख लिखिए:

एक गाँव - पीने के पानी की समस्या - दूर-दूर से पानी लाना - सभी परेशान - सभा का आयोजन - मिलकर श्रमदान का निर्णय - दूसरे दिन से केवल एक आदमी का काम में जुटना - धीरे-धीरे एक-एक का आना - सारा गाँव श्रमदान में - तालाब की खुदाई - बरसात के दिनों जमकर बारिश - तालाब का भरना - सीख।

३) **विज्ञापन लेखन:** **(५)**

निम्नलिखित जानकारी के आधार पर 50 से 60 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए ।

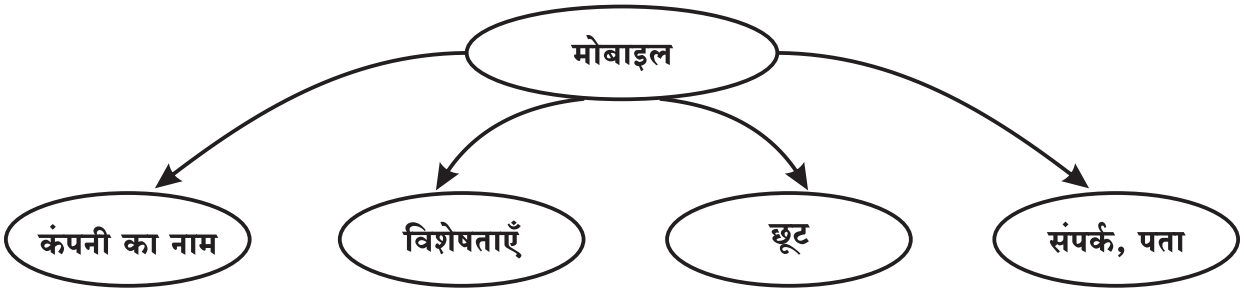

इ) **निबंध लेखन:** **(७)**

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 80 से 100 शब्दों में निबंध लिखिए।

१) मेरा भारत महान

२) मेरा दोस्त / सहेली

■ ■ ■